भारतीय इतिहास (हेरीडोट्स)

प्राचीन भारत :-

इतिहास के तीन भाग हैं:

प्राग इतिहास : जिसका कोई साक्ष्य नहीं मिलता।

आद्य इतिहास : लिपी साक्ष्य हैं लेकिन उनको पढ़ा नहीं जा सकता

इतिहास : यहां से साक्ष्य मिलना प्रारंभ हो जाते हैं।

सिंधु घाटी सभ्यता : (भारत की सबसे प्राचीन सभ्यता)

1400 बस्तियां खोजी जा चुकी हैं,

925 भारत में + 475 पाकिस्तान में हैं।

प्रथम नगरीय सभ्यता है।

1826 में सर्वप्रथम जानकारी चार्ल्स मैसन ने दी।

भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण के महानिदेशक जॉन मार्शल के समय 1921 में रायबहादुर दयाराम साहनी ने **हड़प्पा सभ्यता** एवं 1922 में राखलदास बैनर्जी ने **मोहनजोदड़ो** की खोज की।

पिगट ने मोहनजोदड़ो एवं हड़प्पा को एक ही विस्तृत साम्राज्य की जुड़वा राजधानी बताया है। जोकि 2350 B.C. में पूर्ण विकसित अवस्था में थी। सिंधु सभ्यता का क्षेत्र त्रिभुजाकार था। 1299600 किलो^{2} का क्षेत्र। उत्तर से दक्षिण 1400 एवं पूर्व से पश्चिम 1600 कि.मी. थी।

सिंधु सभ्यता उत्तर में मांडा (जम्मू) दक्षिण में दायमाबाद, पूर्व में आलमगीरपुर, पश्चिम में मकरान समुद्र तट एवं सुत्कांगेडोर तक फैली थी यहां पर भूमध्यसागरीय, प्रोटो आस्ट्रेलॉयड, मंगोलियन एवं अल्पाइन का निवास था। सिंधु घाटी के 1000 स्थलों की खोज हुई हैं।

इनमें 6 को नगर माना गया है,

① हड़प्पा ② मोहनजोदड़ो ③ कालीबंगा ④ लोथल ⑤ बणावली ⑥ धौलवीरा

हड़प्पा की सभ्यता : हड़प्पा पाकिस्तान के पंजाब प्रांत में मांटगोमरी जिले में रावी नदी के तट पर है।

हड़प्पा से कई प्रमाण मिले हैं जैसे :-

पीतल की इक्का गाड़ी, स्त्री के गर्भ से निकलता पौधा, कांसे का दर्पण, सुरमा लगाने की सलाई, मातृदेवी की मूर्ति, लकड़ी का ताबूत, फसल रखने का खत्तिहान, तांबा गलाने का पात्र एवं अन्य।

Kd Job Updates

मोहनजोदड़ो : सिंध के लरकाना जिले मे स्थित था।
'मृतको का टीला' भी कहते है।
कई चीजों के प्रमाण मिले हैं!
विशाल स्नानागार, नाव के चित्र वाली मुद्रा,
बौद्ध स्तूप, लिंग पूजा के प्रमाण, वृषभ की मृणमूर्ति,
अन्नागार, सीटदार शौचालय 1398 मोहरे
पुरोहित का धड़, घोड़े के दांत, समाकस

'लोथल'
'गुजरात के अहमदाबाद जिले में एक बंदरगाह'
प्रमाण : गोदीवाड़ा, अन्नागार, हाथी दांत, युगल शवाधान,
अग्नि पूजा के संकेत, सीप मनका के कारखाने,
आटा पीसने की चक्की।

धौलावीरा (सबसे बड़ा नगर)
हड़प्पा का सबसे आधुनिक नगर था।

'कालीबंगा' राजस्थान के गंगानगर जिले मे घग्घर
नदी के किनारे,
खिलौना, कांच की चूड़िया, अग्नि कुण्ड, जुते हुए खेत,
नक्काशीदार ईंट, ऊंट की अस्थियां, कुएं, नाव,

'बालाकोट'
अरबसागर पर कराची के निकट बंदरगाह,
प्राक् / विकसित सैंधव के अवशेष

'चन्हुदड़ो'
पाकिस्तान के सिंध में, लिखने की चौकिया, दवात, सील मुद्रा ईंट, भट्टी

बणावली!
हरियाणा के हिसार जिले मे घाघरा के किनारे,
'मिट्टी का हल मिला'

Kd Job Updates

रोपड़

मानव कब्र के नीचे कुत्ते का शवाधान मिला।

सुरकोटदा

गुजरात के कच्छ में

आवासीय बस्ती, घोड़े की अस्थियां, पत्थर से ढंकी कब्र

सामाजिक सांस्कृतिक एवं राजनैतिक व्यवस्था

समाज का प्रमुख आधार परिवार था, एवं समाज मातृसत्तात्मक था।

विद्वान, व्यापारी, योद्धा, शिल्पकार। प्रमुख 4 वर्ग थे।

पासा प्रमुख खेल था। हड़प्पा कांस्ययुगीन सभ्यता थी,

एवं यहां के लोग तांबे से भी परिचित थे।

सिंधु सभ्यता की आर्थिक स्थिति का आधार व्यापार / पशुपालन था

वस्त्र का निर्माण, लोथल एवं रंगपुर में घोड़े की मूर्तियां

यह सुनिश्चित करती थी कि ये घोड़े से परिचित थे।

व्यापार मुख्यतः जलमार्ग से होता था।

मिट्टी की मूर्तियों में कुबड़दार बैल उल्लेखनीय है।

वृक्षों में पीपल पवित्र था।

कालीबंगा एवं लोथल से 3 युगल शवाधान मिले।

पश्चिम एवं मध्य एशियाई देशों से घनिष्ट व्या. संबंध।

वैदिक काल

भारत में लोहे का उपयोग 1000 BC के लगभग शुरू हुआ,

1500 BC - 600 BC तक का काल वैदिक काल

पूर्ववैदिक काल: 1500 BC - 1000 BC

उत्तरवैदिक काल: 1000 BC - 600 BC

पूर्ववैदिक काल:

सबसे प्राचीन ग्रंथ ऋग्वेद की रचना इसी काल में हुई

आर्य प्रारंभ में ईरान गए, वहां से भारत आए

प्रारंभिक आर्य सतलज व यमुना के बीच में रहते

ये आर्यों ने अपने निवास को सप्तसिंधु कहा है।

सिंधु, रावी, व्यास, चिनाब, झेलम, सतलज, सरस्वती,

Kd Job Updates

सिंधु ऋग्वेद की सबसे महत्वपूर्ण नदी थी, एवं सरस्वती को नदियों की माता कहा जाता था।
आर्य हिमालय से परिचित थे विंध्य पर्वत से नहीं,
आर्य समाज ग्रामीण एवं कबीले वाला समाज था
ऋग्वेद के दसवें एवं अंतिम मंडल में पुरुष सूक्त में विराट पुरुष द्वारा 4 वर्णों की उत्पत्ति का जिक्र मिलता है
'मुख से ब्राह्मण: भुजा से क्षत्रिय उदर से वैश्य
पैरों से शूद्र"
ऋग्वैदिक समाज पितृसत्तात्मक समाज था, और महिलाओं को भी प्रधानता दी जाती थी।
महिलाएं राजनीति में भाग लेती थीं, एवं शिक्षा प्राप्त करती थी।
(ऋचा) ऋग्वेद की घोषा, अपाला, विश्ववारा, की रचना महिलाओं ने की,
देवता: अंतरिक्ष: इंद्र, आकाश: वरुण, पृथ्वी: अग्नि
ऊन-मृगचर्म के वस्त्र, शाकाहार-मांसाहार-सोमरस ग्रहण करते थे।
दास प्रथा, गोद लेने की प्रथा, नियोग प्रथा प्रचलित थी।
शिक्षा आश्रमों में दी जाती थी।
भरत-त्रित्सु भी आर्य थे, विश्वमित्र एवं वशिष्ठ आर्यों के गुरु थे।
राजनैतिक 5 इकाइयां थी: गृह, ग्राम, विश, जन, राष्ट्र,
गृह सबसे छोटी राष्ट्र सबसे बड़ी इकाई थी।
राजा तथा पुरोहित-प्रमुख पदाधिकारी होते हैं।
गाय (अघन्या): पशु चोरी प्रमुख अपराध था।
ऋग्वेद में इन्द्र पर 250, अग्नि पर 200 सूक्त हैं।
इंद्र: पुरंदर
राजा का सहयोग देने के लिए 3 अधिकारी थे:
पुरोहित, सेनानी, ग्रामणी

उत्तरवैदिक काल:

यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद, आरण्यक, पुराण, उपनिषद की रचना इस काल में हुई।
इस काल में आर्य सप्त सैंधव से निकलकर पूरे गंगा-यमुना दो आब में फैल गई।

Kd Job Updates

ग्रामीण समाज धीरे-धीरे नगरीय समाज मे परिवर्तित हो रहा था।
विधवा। स्त्री अपने देवर से विवाह कर सकती थी।
जाबालि उपनिषद मे जीवन को 100 वर्षों का कहा गया है
ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ, सन्यास
वर्ण विभाजन जन्म पर आधारित हो गया।
इसकाल मे गोत्र व्यवस्था का उदय हुआ (अथर्ववेद मे गोत्र का उल्लेख
कबीलों के जनपद बनने लगे,
कैकई, गंधार, काशी, कौशल, मद्र प्रमुख एवं शक्तिशाली राज्य थे।
राजत्व का दैवी सिद्धांत सामने आया एवं महिला की भागीदारी
कम हो गई।
पुरु एवं भरत जनपद मिलकर "कुरु" तुर्वश + क्रिवि मिलकर पंचाल बना
राजा: राजसूय, अश्वमेध, वाजपेय यज्ञ. करवाता था।
पूर्व के सम्राट, पश्चिम: स्वराट, उत्तर: विराट, द: भोज, मध्य: राजा
अथर्ववेद मे सभा समीति को प्रजापति की 2 पुत्रियां कहा
विदेह, काशी, कौशांबी प्रमुख व्यापारिक केन्द्र थे।
अलीगढ़ के पास अतरंजीखेड़ा मे लोहे के फाल के प्रमाण
शिव प्रमुख देवता रुद्र इसकाल मे पुनर्जन्म, मोक्ष, कर्म के सिद्धांत स्पष्ट हुए
वेदव्यास ने उत्तराखंड के बदरिका आश्रम मे महाभारत लिखा
अगस्त्य मुनि ने द. मे आर्यों का प्रचार किया।
इतिहास एवं पुराण पंचमवेद,
शतपथ ब्राह्मण सबसे पुराना ब्राह्मण।
प्रशासनिक पदाधिकारी रत्निन कहलाते थे, इनकी सं० 12 होती थी।
4 यज्ञ होते थे: अश्वमेध, राजसूय, वाजपेय, अग्निष्टोम

वैदिक साहित्य

'वेद' ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद
ऋग्वेद की रचना लगभग 1500 BC मे हुई थे 10 मंडल मे विभाजित हैं।
इसमे कुल 1028 मंत्र हैं, 2-7 मंडलों की रचना पहले हुई
जिनको वंशमंडल कहा गया।
गृत्समद, विश्वमित्र, कामदेव आदि, वशिष्ठ, भारद्वाज
9वे मंडल मे सोमदेव 10वे मंडल मे वर्णव्यवस्था का जिक्र है

Kd Job Updates

गायत्री मंत्र ऋग्वेद मे है, जेंद अवेस्ता का स्रोत ऋग्वेद ही है,
'असतो मे सदगमय' का भिन्न भी ऋग्वेद मे है।
सामवेद मे मात्र 75 मंत्र ही मौलिक है।
सामवेद के दो भाग: पूर्वार्चिक, उत्तरार्चिक
इस वेद की प्रचलित संहिता 'कौथुम'
कुल 1000 थी, 'कौथुम, राणायणीय, जैमिनीय' उपलब्ध है।
सामवेद मे 1974 मंत्र है जिनमे 1549 ऋग्वेद है।
संगीत की उत्पत्ति सामवेद से हुई।
तीसरे वेद यजुर्वेद मे आंशिक रुप से पद्य (आंशिक रुप से गद्य है।
इसके दो भाग है: ① शुक्ल ② कृष्ण
कृष्ण: तैत्तरीय संहिता शुक्ल: वाजसनेयी संहिता
राजसूय, वाजपेय, यज्ञ का उल्लेख इसी काल
मे हुआ।
अथर्ववेद चौथा वेद है: प्रथम 3 वेद मंडलों मे विभाजित है,
अथर्ववेद कांडो मे विभाजित है। इसमे 20 कांड है।
अथर्ववेद को ब्रह्मवेद लोकसाहित्य वेद भी कहते है।
गद्य पद्य दोनो मे है, अधिकांश भाग होने पर
आधारित है।

ब्राह्मण

ब्राह्मण ग्रंथ वेदों के महत्वपूर्ण रुप है, ब्राह्मण साहित्य का प्रारंभ कृष्ण यजुर्वेद के गद्य भाग के व्याख्या खंडो से होता है।
अलग-2 वेदों के अलग-2 ब्राह्मण:
ऋग्वेद: ऐतरेय, कौषितक
सामवेद: पंचविंश, षडविंश, जैमिनी
यजुर्वेद: शतपथ, गोपथ

आरण्यक (इनको वनों मे लिखा गया)

आरण्यक एवं उपनिषद दोनों वेदों के अंतिम भाग है इसलिए इनको वेदांत कहा गया।
अलग-2 वेदों के अलग-2 आरण्यक है:- अथर्ववेद का कोई नही।
ऋग्वेद-ऐतरेय, कौषतिक, सामवेद: जैमिनी, छांदोग्य, यजुर्वेद: वृहदारण्यक

Kd Job Updates

भारतीय दर्शन आ॰ :- उपनिषद" (गुरु के समीप बैठकर शिक्षा ग्रहण करना)

ऋग्वेद : एतरेयोपनिषद, कौषितक्यूपनिषद

सामवेद : छांदोग्योपनिषद, केनोपनिषद छांदोग्य

यजुर्वेद : इशोपनिषद, वृहदराण्यकोपनिषद, कठोपनिषद

अथर्ववेद : प्रश्नोपनिषद, मुण्डीकपनिषद, माण्डुक्योपनिषद

108 उपनिषद, 12 प्रमाणित हैं।

(श्रुति) 'वेदांग' 6 होते हैं"

शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छंद, ज्योतिष

'सूत्र : 4 होते हैं"

श्रौतसूत्र : धार्मिक रुढ़ियों, नियमों एवं विश्वास की जानकारी

गृहसूत्र : जन्म विवाह उपनयन आदि संस्कारों का वर्णन

धर्मसूत्र : कर्म व्यवहार यज्ञ संस्कार का वर्णन

शुल्वसूत्र : यज्ञवेदी का निर्माण, ज्यामितीय व गणितीय बातें

'भारतीय दर्शन'

न्यायदर्शन : गौतम

सांख्यदर्शन : कपिल

योगदर्शन : पतंजलि

वैशेषिक : कणाद

वेदांत : बादरायण

मीमांसा : जैमिनी

'स्मृति'

ये धार्मिक कानूनी संहिताएं हैं :

① मनुस्मृति

② याज्ञवल्क्य स्मृति

③ नारद स्मृति

④ पाराशर स्मृति

⑤ कात्यायन स्मृति

⑥ वृहस्पति स्मृति

Kd Job Updates

भौतिकवादी संप्र: 'चारवाक' धार्मिक आंदोलन

6वी शताब्दी मे भारत मे कई धर्मो का उदय हुआ।
बौद्ध धर्म के अनुसार 62 एवं जैन धर्म के अनुसार 200 सं. थे
इस समय उत्तर भारत मे 6 प्रमुख संप्रदाय थे।

- अक्रियावादी: पूरण कस्यप
- आजीवक: गोशाल
- अनिश्चयवादी: संजय वेठलिपुत्त
- अकृतवादी: पकुध कात्यायन
- चतुर्याम संवर: निग्रंठ नाथपुत्र
- उच्छेदवादी: अजीत केसकंबलिन

4 नियम: सत्य, अहिंसा, अस्तेय, अपरिग्रह

त्रिरत्न: सम्यक ज्ञान, सम्यक चरित्र, सम्यक दर्शन

महावीर के मत को अनेकांतवाद भी कहते है।

(ऋषभ) 'जैन धर्म' वा: महावीर

24 तीर्थंकर 23वे पार्श्व 24 (महावीर)
'पार्श्वनाथ': अश्वसेन एवं वामा के पुत्र
महावीर का जन्म 540 B.C. वैशाली के निकट कुंडग्राम मे हुआ। बचपन का वर्द्धमान, सिद्धार्थ एवं त्रिशाला के पुत्र
महावीर का विवाह यशोदा से हुआ, जिससे प्रियदर्शना नामक कन्या का जन्म हुआ जिसका विवाह जमालि से हुआ 30 वर्ष की आयु मे गृह त्याग
12 वर्ष की कठोर साधना के बाद जृम्भिक ग्राम के पास ऋजुपालिका नदी के तट पर उनको ज्ञान प्राप्त हुआ
अवंति के प्रद्योत, बिंबसार, उदायिन, स्तनिक ने जैन धर्म के प्रचार में इनकी मदद की। चंपा के राजा दधिवाहन की पुत्री पद्मावती इनकी प्रथम शिष्या थी।
72 की उम्र मे पावापुरी मे मल्ल के शासक हस्तिपाल के महल मे निधन हुआ।

महावीर की मृत्यु के बाद सुधर्मन एवं जंबू जैन धर्म के अध्यक्ष हुए।
जैन धर्म 300 B.C. मे श्वेतांबर एवं पीतांबर मे बंटा।
भद्रबाहु ने कल्पसूत्र लिखा।
जैन साहित्य को आगम कहते है।
12 अंग 11 उपांग 10 पैन्न 4 मूलसूत्र, 1 नंदी सूत्र 7 छेदसूत्र प्राकृत भाषा में रचे गए।
अपभ्रंश का पहला व्याकरण-हेमचंद्र
जैन मंदिर 'बसादि' कहलाते है।

"शैव धर्म"

लिंग पूजन एवं पशुपतिनाथ की पूजा के प्रमाण हमें सिंधु सभ्यता से मिले।
शैव मत मे 4 संप्रदाय थे।
शैव, कालामुख, कापालिक, पशुपत
शैव के तीन पदार्थ: पशु, पति, पाश
कापालिक: शमशान सिद्धि, सुरापान नरबलि का जिक्र था।
द. भारत मे शैव: नयनार कहलाए

Kd Job Updates

'बौद्ध धर्म'

गौतम बुद्ध का जन्म 563 B.C. मे नेपाल के कपिलवस्तु के समीप लुंबनि ग्राम मे हुआ। पिता शुद्धोधन एवं माता महामाया थी।
पत्नि यशोधरा एवं पुत्र राहुल था।

29 वर्ष की आयु मे गृहत्याग किया था जिसे महाभिनिष्क्रमण कहा गया। बुद्ध ने सर्वप्रथम अलारकलाम नामक सन्यासी के आश्रम मे वैशाली मे तपस्या की वे सांख्य दर्शन के आचार्य थे।

वैशाख पूर्णिमा की रात को 35 वर्ष की उम्र में पीपल वृक्ष "अश्वत्थाम के नीचे सत्य के दर्शन हुआ। उनका ज्ञान प्राप्त करना संबोधि कहलाया।

सारनाथ के ऋषिकुंभ मे 5 ब्राह्मण शिष्यों को उपदेश देना धर्मचक्रप्रवर्तन कहलाया। तपस्सु व कल्लिक उनके प्रथम शिष्य थे।

80 वर्ष की अवस्था मे कुशीनारा (देवरिया : उ.प्र.) मे निर्वाण को प्राप्त हुए। महापरिनि
4 सत्यों पर उपदेश : दुख, दुख समुदाय, दुख निरोध, दुख निरोधगामिनी प्रति
अष्टांगिक मार्ग : सम्यक (दृष्टि, वाक्, कर्मान्त, स्मृति, समाधि, संकल्प, आजीव, व्यायाम)
त्रिरत्न : बुद्ध, धम्म, संघ   त्रिपिटक : सुत्त, विनय, अभिधम्म

हीनयान, महायान दो संप्रदाय जिनके 18 संप्रदाय है।
हीनयान : रूढ़िवादी, महायान : सुधारवादी संप्रदाय है।
पंचशील का सिद्धांत बौद्ध धर्म की देन है।

'वैष्णव धर्म'

महाभारत मे वासुदेव कृष्ण को विष्णु से जोड़ा गया तो भागवत /वैष्णव धर्म बन,
वैष्णव धर्म को पांचरात्र धर्म भी कहा गया।
इसमे विष्णु के अलावा : साम्ब, संकर्षण, प्रद्युम्न, अनिरुद्ध पूजे गए।
गुप्तकाल का प्रतिष्ठित धर्म है।
दक्षिण में वैष्णव संत को अलवार कहा गया।

'पंचमार्क सिक्के'

महाजनपद काल   स्रोत : जैन एवं बौद्ध साहित्य

16 महाजनपद : मगध, अंग, मल्ल, चेदि, वत्स, कुरु, काशी, कोशल, गंधार, वज्जि, पंचाल, मत्स, सूरसेन, अस्मक, अवंति, कंबोज अश्मक - गोदावरी को छोड़कर शेष उत्तर भारत के थे।
महाजनपद : राजतंत्रीय, गणतंत्रीय (राज. :- कोशल, वत्स, अवंति, मगध)
गण. राजधानी : मोरिय : पिपलीवन, विदेह : मिथिला, शाक्य : कपिलवस्तु, मल्ल : पं
बुली : अल्लकप्प, कोली : रामगाम, कालाम : केसपुत, भर्ग : संसुमारगिरी, लिच्छवि : वैशा
नाया :

Kd Job Updates

'मगध'

मगध की नींव वृहद्रथ ने डाली वह जरासंध का पिता व वसु का पुत्र था।

फिर मगध पर 'हर्यंक वंश' की स्थापना हुई जिसका संस्थापक बिंबिसार था। (544 B.C.) उसने वैवाहिक संबंधो के आधार पर अपनी राजनीतिक स्थिति सुदृढ़ की उसने गिरिव्रज से अपनी राजधानी को राजगृह स्थानांतरित किया। उसने अपने राजकीय चिकित्सक जीवक को अवंति के शासक चंडप्रद्योत महासेन की चिकित्सा के लिए भेजा।

बिंबिसार को उसके पुत्र अजातशत्रु (492 B.C.- 460 B.C.) ने बंदी बनाकर साम्राज्य पर कब्जा किया। अजातशत्रु को 'कुणिक' भी कहते है। अजातशत्रु ने वज्जि संघ के लिच्छवियों को पराजित करने के लिए रथमूसल, महाशिलाकंटक नामक हथियारों का उपयोग किया।

अजातशत्रु ने गंगा एवं सोन नदी के संगम पर पाटलिग्राम का किला बनवाया एवं पाटलिपुत्र की नींव रखी।

अजातशत्रु के कार्यकाल मे प्रथम बौद्ध संगीति राजगृह की सप्तपर्णी गुफा मे हुई।

अजातशत्रु का पुत्र उदयभद्र या उदायिन पाटलिपुत्र का संस्थापक बना जिसका कार्यकाल (460 B.C - 444 B.C) रहा। नागदशक अंतिम शासक था।

शिशुनाग वंश (412 B.C.- 344 B.C.)

यह हर्यंक वंश का सेनापति था जिसने साम्राज्य पर कब्जा कर 'शिशुनाग वंश' की नींव डाली, एवं वैशाली को मगध की दूसरी राजधानी बनाया, इस वंश के शासक कालाशोक के कार्यकाल में दूसरी बौद्ध संगीति हुई।

'नंद वंश'

इस वंश की स्थापना 'महापद्मनंद' ने की, उसे सर्वक्षत्रांतक या सर्व क्षत्रियों का नाश करने वाला कहते हैं। इसने एकछत्र राज्य की स्थापना की, इसलिए इसे 'एकराट' की उपाधि थी।

इसी के शासनकाल में सिकंदर ने आक्रमण किया।

इसे 'हिदास्पेस'- वितस्ता - हाइडस्पीज - झेलम का युद्ध कहते हैं।

Kd Job Updates

सिकंदर का भारत अभियान

सिकंदर मकदूनिया के सम्राट फिलिप II का पुत्र था।
(326 B.C) झेलम के शासक पोरस ने सिकंदर का विरोध किया।
तब इनके बीच युद्ध हुआ जिसमे पोरस की हार हुई।
इसे वितस्ता का युद्ध कहा गया।
सिकंदर की सेना ने व्यास नदी पार करने से मना किया तो सिकंदर को वापस लौटना पड़ा। एवं 323 B.C मे सिकंदर की मृत्यु हो गई।

मौर्य साम्राज्य

चंद्रगुप्त मौर्य ने चाणक्य की सहायता से नंद वंश के शासक घनानंद को हराकर मौर्य की स्थापना की।
सेल्युकस ने मैगस्थनीज को चंद्रगुप्त के काल मे राजदूत बनाकर भेजा,
विलियम जोन्स ने सर्वप्रथम सेन्ड्रोकोट्स के रूप मे पहचान की।
चंद्रगुप्त का विवाह एक संधि के तहत सेल्युकस की पुत्री कार्नेलिया से हुआ
अंतिम समय मे जैन भिक्षु भद्रबाहु से शिक्षा लेकर श्रवणबेलगोला में प्राणों का त्याग किया।
चंद्रगुप्त के बाद उसका पुत्र बिन्दुसार शासक बना। इसने 298 BC-273 BC तक शासन किया। राजगृह को मगध की राजधानी बनाया।
सीरिया के राजा एण्टीओकस ने डायमेकस एवं मिस्र के राजा फिलाडेल्फस ने डायनोसिस को राजदूत बनाकर भेजा।
बिंदुसार के समय अशोक उज्जयनि का राज्यपाल था, 273 B.C मे शासक बना एवं 269 B.C. मे राज्याभिषेक हुआ।
261 B.C मे कलिंग युद्ध मे अशोक की जीत हुई। पुराणों मे 'अशोक वर्धन' अभिलेखों मे अशोक को देवनामप्रिय से संबोधित किया है।
236 B.C मे अशोक की मृत्यु हुई। धम्म की परिभाषा राहुलोवाद सूक्त मे है।
राज्याभिषेक के लघु शिलालेख मे अशोक ने खुद को बुद्धशाक्य कहा।
अशोक का प्रथम अभिलेख 1750 मे दिल्ली मे टीफेन्थैलर ने की।
और सफलता प्रिंसेप को मिली।
अधिकारियों को तीर्थ कहा गया। अशोक की मृत्यु के बाद कई और शासक आए मौर्य वंश मे, आखिरी राजा बृहद्रथ था।
जिसकी हत्या उसके सेनापति पुष्यमित्र शुंग ने की।

Kd Job Updates

शुंग (184 B.C.-73 B.C.)

'गार्गी संहिता' मे इनका जिक्र मिलता है।

(184 B.C.) मौर्य वंश के अंतिम शासक बृहद्रथ की हत्या उसके सेनापति पुष्यमित्र शुंग ने की और शुंग वंश की नीव डाली।

शुंग ने दो अश्वमेध यज्ञ किये,

पतं, मनु तथा पुष्यमित्र परस्पर मित्र एवं समकालीन थे

मनु ने मनुसंहिता एवं पतंजलि ने महाभाष्य लिखी,

कालिदास के ग्रंथ मालविकाग्निमित्र मे अग्निमित्र, पुष्यमित्र शुंग का पुत्र है।

शुंग वंश का दसवा एवं अंतिम शासक अग्निमित्र था।

कण्व वंश (73 B.C.-27 B.C.)

वसुदेव ने अंतिम शासक देवभूति की हत्या कर कण्व वंश की स्थापना की।

सुशर्मा वंश का अंतिम शासक था।

(आंध्र भोज) सातवाहन वंश (60 B.C.-250 AD)

संस्थापक सिमुक ने सुशर्मा की हत्या कर सातवाहन वंश की हत्या की।

शातकर्णी प्रथम शक्तिशाली शासक था, उसके बाद पत्नि नागनिका ने संरक्षिका के रूप मे काम किया। इनमे मां का नाम जोड़ा जाता था जैसे गौतमीपुत्र सातकर्णी, इनकी राजधानी पैठन/प्रतिष्ठान (महाराष्ट्र)

'हाल' ने गाथासप्तसती लिखी। उसे कविशासक भी कहा गया।

सातवाहनों ने ब्राह्मणों को भूमिदान देना आरंभ किया (सीसे के सिक्के)

सातवाहनो के पतन के बाद इक्ष्वाकुओं ने अपना साम्राज्य स्थापित किया।

चेदि वंश (महामेघवाहन)

चेदि वंश प्रथम शताब्दी ई.पू. कलिंग मे था। राजधानी सुक्तिमति।

खारवेल इस वंश का महान शासक था। कलिंग मे अशोक ने इसी खारवेल को हराया था (हाथीगुंफा अभिलेख)

हिन्द-यवन

ये वैक्ट्रिया के शासक थे, प्रथम यवन शासक थे, उसने सियालकोट को राजधानी बनाया, इसके बाद यूक्रेटाइडस, सबसे प्रतापी मिलिंद था।

'मिलिंदपन्हो' ग्रंथ मे नागार्जुन के साथ वाद-विवाद का वर्णन है।

Kd Job Updates

गोंदोफर्नीज के शासनकाल मे सेंट थामस ईसाई धर्म का प्रचार करने आए।

"शक"

भारत मे शक ईरान के रास्ते आए थे। राजवुल मथुरा का प्रथम शक सत्रप था। प्रारंभिक शकों में माउस प्रमुख था। रुद्रदामन सबसे शक्तिशाली व प्रसिद्ध था। रुद्रदामन ने 130 AD - 150 AD तक शासन किया।

चंद्रगुप्त और अशोक द्वारा निर्मित सौराष्ट्र की सुदर्शन झील को अपने राज्यपाल सुविशाख द्वारा रुद्रदामन ने पुनः बनवाया।

रुद्र सिंह III अंतिम शक शासक था।

"पल्लव"

इस वंश की स्थापना मिथ्रदात I ने (171-130 B.C.) मे की, सर्वाधिक शक्तिशाली मिथ्रदात II था।

"कुषाण"

ये चीन की यू-ची जनजाति के थे, वे मध्य एशिया से भारत आए।

कुजुल कडफिसस कुषाण वंश का प्रथम शासक था (45 A - 78 A)

सबसे प्रसिद्ध कनिष्क 78 AD मे शासक बना इस उपलक्ष्य मे शक संवत जारी किया गया। कनिष्क की राजधानी पेशावर थी।

कनिष्क के दरबारी: वसुमित्र, अश्वघोष, पार्श्व, चरक, अग्निमित्र, नागार्जुन

चरक कनिष्क का राजवैद्य था (आयुर्वेद का जनक: चरक संहिता)

अश्वघोष ने बुद्धचरित भास ने स्वप्नवासवदत्तम की रचना की।

"संगम युग"

मौर्य काल मे दक्षिण भारत में कृष्णा एवं तुंगभद्रा नदियों के पास तीन छोटे-2 राज्य चोल चेर तथा पाण्ड्य थे।

इनको संगमकालीन राज्य एवं युग को संगम युग कहते है।

दक्षिण भारत मे आर्य संस्कृति का प्रसार अगस्त्य ने किया।

प्रथम संगम का आयोजन ऋषि अगस्त की अध्यक्षता में मदुरै मे किया गया।

इसमे कुल सदस्यों की संख्या 549 थी। यह संगम 4400 वर्ष चला।

द्वितीय संगम कपाटपुरम मे तोलकाप्पियार की अध्यक्षता मे हुआ।

इसमे 49 सदस्य थे यह संगम 3700 वर्ष चला।

तृतीय संगम का आयोजन उत्तरी मदुरै मे नक्कीरर की अध्यक्षता मे किया गया यह संगम 1800 वर्ष चला, इसमे 49 सदस्य थे।

Kd Job Updates

संगमकालीन राज्य

संगमकालीन राज्यो मे सर्वप्रथम चोलों का उदय हुआ।

प्रथम ऐतिहासिक शासक उरुवप्पहर्रैइलंजेतचेन्नि था।

करिकाल एवं कोच्चेंगणान चोलों के दो प्रसिद्ध शासक थे। पहले राजधानी उत्तरी मनलूर बाद मे उरैयूर बन गई।

चेर राज्य मे कोचीन उत्तरी त्रावणकोर एवं दक्षिणी मालाबार के क्षेत्र सम्मिलित थे, इनकी दो राजधानियां वंजि एवं तोंडी थी।

चेरों का ज्ञात आरंभिक शासक उदयंजेरल था बाद मे नेंडुंजेरल बना।

शेनगुट्टवन चेरों का सबसे प्रसिद्ध शासक था पारी को अंतिम चेर शासक कहा।

पाण्ड्य राज्य चोल राज्य के दक्षिण में कन्याकुमारी से कोरकै तक फैला था, पहले पाण्ड्यों की राजधानी तिरुनेवेल्ली थी बाद मे मदुरै हुई।

वदिमबलनवन्नि पाण्ड्यों का पहला शासक था, लेकिन नेंडुजेलियन पहला प्रसिद्ध शासक बना। पालवाहन एवं पल्लव ने पाण्ड्यों को समाप्त किया।

तमिल ग्रंथ तोलकाप्पियम, इरैयनार कलावियल मे 8 प्रकार के विवाह का उल्लेख एवं मणिमेकलै मे सतीप्रथा का उल्लेख है।

"कुरल" मे संगमकालीन व्यवस्थाओं का वर्णन है।

राज्य संचालक एवं शासन राजतंत्रात्मक वंशानुगत थी।

दो प्रकार की सभाएं थी नगरसभा (उर), ग्रामसभा (मनरम)

राजा का न्यायालय मनरम कहलाता था।

मरुगन, सुब्रमण्यम प्रमुख देवता थे।

कदंब एवं गंग राज्यवंश

कदंब ब्राह्मण थे, जो पहले पल्लव के आधीन थे। मयूरवर्मन ने कदंब की स्थापना की। उसने वनवासी को राजधानी पालासिका को उप राजधानी बनाया।

काकुत्स्थवर्मन सर्व शक्तिशाली शासक था, इसे तालगुण्ड मे विशाल तालाब बनाया।

मृगेशवर्मन का पालासिका एवं वनवासी पर अधिकार होता है। इसने अपने पिता की स्मृति मे पालासिका मे जैन मंदिर बनवाया।

अजवर्मन के समय चालुक्यों ने कदंब राज्य पर अधिकार किया।

गंग का राज्य मैसूर के दक्षिण मे कदंबो एवं पल्लवो के राज्यों के मध्य था, गंगवाडि कहलाया। प्रारंभिक राजधानी कोलार जो बाद मे तलकाड हो गई।

कोंकणिवर्मा इस वंश का प्रथम शासक था। माधव-I ने दत्तकसूत्र टीका लिखी दुर्विनीत (540-600 BC) प्रतापी एवं संस्कृत का विद्वान था। श्रीपुरुष राजधानी को 1004 ई. चोल शासक राजराज I ने गंगराज्य पर अधि किया। तलकाड से मान्यपुर ले गया।

Kd Job Updates

गुप्त कुषाणों के सामंत थे श्रीगुप्त ने स्थापना की 'महाराज' की उपाधि

अजंता : 16 मरणासन्न राजकुमारी

गुप्त शासक वैष्णव थे इनका चिन्ह गरुड़ था।

गुप्त साम्राज्य (275 AD - 550 AD)

'विदिशा की उदयगिरि गुफा'

श्रीगुप्त एवं घटोत्कच : श्रीगुप्त संस्थापक एवं घटोत्कच उसका पुत्र था।

चंद्रगुप्त - I : तीसरा गुप्त शासक, गुप्त संवत (319-20) लिच्छवी कु. देवी विवाह

समुद्रगुप्त : हरिषेण : (प्रयाग प्रशस्ति), मेघवर्मन ने गया मे बौद्ध मठ बनाया 'नेपोलियन'

चंद्रगुप्त विक्रमादित्य : कुबेर वकाटक, करेव विवाह फायरान कालिदास

कुमारगुप्त - I : मंदसौर अभि. : वत्सभट्टी सूर्यमंदिर, नालंदा विश्व. (415-455)

स्कंदगुप्त : शक्रादित्य, हूणों का पराजित, सुदर्शन झील (पुरपाति-चक्रपालित)

- पुरुगुप्त
- कुमारगुप्त II
- बुधगुप्त
- नरसिंह गुप्त बालादित्य
- भानुगुप्त
- वैन्यगुप्त
- कुमारगुप्त III
- विष्णुगुप्त अंतिम शासक

नालंदा विश्व : 'आक्सफोर्ड ऑफ महायान बौद्ध' मो. गौरी के जनरल बख्तियार द्वारा नष्ट।

विक्रमशिला विश्व. : धर्मपाल (780-815)

अजंता एवं बाघ गुफाएं मंदिरो का निर्माण

हूणों का प्रथम शासक तोरमाण था। (508-99) मालवा तक शासन था।

तोरमाण के बाद पुत्र मिहिरकुल ने आक्रमण किए जिसको नरसिंहगुप्त बालादित्य एवं यशोधर्मन ने पराजित किया। हूणों का अंत (534)

सतीप्रथा का पहला प्रमाण इसी काल मे मिलता है। सागर के एरण अभिलेख मे एक स्त्री के सती होने का वर्णन है। यह एक सैनिक गोपराज की पत्नि है।

प्रशासनिक इकाई	अधिकारी
देश	गोप्ता
भुक्ति	उपरिक
विषय	विषयपति
पेठ	पेठपति
ग्राम	ग्रामपति

सामंतवाद का उदय शक-कुषाण काल मे हुआ, इसका जिक्र अश्वघोष - बुद्धचरित मे

नागपुर वकाटक की राजधानी : नंदिवर्धन

शून्य का आविष्कार, दशमलव प्रणाली।

आर्यभट्ट, वाराहमिहिर आचार्य सुश्रुत ब्रह्मगुप्त, नागार्जुन इसी काल मे थे।

देवगढ़ का दशावतार मंदिर,

गुप्तकाल मे पहली बार फौजदारी, दीवानी का प्रयोग हुआ।

रामायण, महाभारत को अंतिम रूप इसी काल मे दिया गया।

चंद्रगुप्त ने पहली बार चांदी के सिक्के चलाए

दिल्ली के महरौली का लौह स्तंभ गुप्त काल से है।

Kd Job Updates

'गुप्तोत्तर काल'

550 आते-2 गुप्त साम्राज्य का पतन हो गया, एवं उसके आधीन शासकों ने स्वतंत्र होकर अपने-2 राजवंश स्थापित किए।

कन्नौज के मौखरी: यशोधर्मन की मृत्यु के बाद मौखरियों का कन्नौज पर शासन हो गया। ईशान वर्मा, सूर्यवर्मा, हरिवर्मा, आदित्य वर्मा

गया के मौखरी: मौखरी वंश का उदय गया के आसपास हुआ, यज्ञवर्मा प्रथम शासक

मालवा का यशोधर्मन: 530 के आसपास मध्य भारत मे पराक्रमी शासक यशोधर्मन का जन्म हुआ, इसने हूण शासक मिहिरकुल को परा. किया।

पंजाब के हूण: ये पंजाब एवं उसके आसपास शासन कर रहे थे, तोरमण एवं मिहिरकुल हूणों के नेता थे।

वल्लभी के मैत्रक: ये गुप्त के सामंत थे, इनके प्रारंभिक राजा भट्टार्क एवं पुत्र धरसेन

मगध तथा मालवा के उत्तरगुप्त: गुप्त के पतन के बाद मालवा मे उत्तर गुप्त वंश का उदय हुआ जिसने लगभग 200 वर्ष शासन किया
संस्थापक कृष्णगुप्त (510-525 AD)

बंगाल के गौड़: गौड़ो ने उत्तर पश्चिम बंगाल मे स्वतंत्र राज्य की स्थापना की
शशांक इस वंश का प्रमुख शासक था राजधानी: कर्णसुवर्ण

वाकाटक: सातवाहन के पतन एवं छठी सदी के बीच चालुक्यों के उदय से पहले वाकाटक ही दक्कन के सर्वशक्तिशाली शासक थे। ये ब्राह्मण थे, इस वंश के संस्थापक विन्ध्यशक्ति एवं प्रवरसेन शक्तिशाली शासक था। प्रवरसेन ने 4 अश्वमेध यज्ञ करवाए।
इनकी दूसरी शाखा वत्सगुल्म कहलाती है।
वाकाटको एवं गुप्तों के वैवाहिक संबंध है।

Kd Job Updates

हर्ष के समय प्रयाग के संगम स्थल मे प्रति 5 वर्ष एक समारोह का आयोजन किया जाता था। जिसे महामोक्ष कहते थे यह कार्यक्रम 75 दिन चलता था, इसमे हर्ष अपनी संपत्ति दान करता था।

'ह्वेनसांग' उ. भारत का अं. हिंदु " हर्षवर्धन (606-647 AD) शिलादित्य की उपाधि

पंजाब एवं दिल्ली के समीप श्रीकंठ एक जनपद था। थानेश्वर इसी के अंतर्गत प्रदेश था। इसमे पुष्यभूति नामक शासक हुआ। जिसने 6वी सदी मे वर्धन की स्था.

हर्षवर्धन पुष्यभूति वंश का था, थानेश्वर का शासक था, कन्नौज राजधानी थी।

सोनपत मोहर मे पूरा नाम हर्षवर्धन मिलता है।

बाणभट्ट हर्षवर्धन का दरबारी था। जिसने कादंबरी हर्षचरित नामक पुस्तक लिखी

हर्षवर्धन ने 3 पुस्तक लिखी: रत्नावली, प्रियदर्शिका, नागानंद

चालुक्य शासक पुलकेशिन के एहोल लेख मे हर्ष के बारे मे जानकारी मिलती है। इसकी रचना पुलकेशिन के दरबारी रविकीर्ति ने की। इसमे हर्ष-पुलकेशिन-II के मध्य हुए युद्ध का वर्णन है जिसमे हर्ष पराजित हुआ।

पाल वंश

इन लोगो ने बंगाल पर शासन किया था। पश्चिम बंगाल को 'गौड़' एवं पूर्वी बंगाल को बंग कहते है।

पाल वंश के पहले अशांति थी, जिसे मत्स्य न्याय कहते है।

पाल वंश का संस्थापक गोपाल (750-770) था, इसने ओदंतपुरी के प्रख्यात मंदिर का निर्माण करवाया।

गोपाल के बाद धर्मपाल (770-810)

कन्नौज के त्रिपक्षीय संघर्ष का शासनकाल

बौद्ध धर्म का अनुयायी एवं विक्रमशिला विश्वविद्यालय का संस्थापक।

बौद्ध लेखक हरिभद्र को संरक्षण दिया।

महिपाल-I (998-1038) को दूसरा संस्थापक भी कहते है।

रामपाल (1077-1120) अंतिम शक्तिशाली शासक, इसके समय संध्याकर नंदी ने रामपालचरित की रचना की।

'कैवर्त' के किसानो ने विद्रोह किया।

मदनपाल अंतिम शासक था।

सेन वंश

पालों के बाद सेन वंश अस्तित्व मे आया। संस्थापक सामंतसेन ने राढ़ मे राज्य की स्थापना की।

विजयसेन (1095-1158 AD)

इसने प. बंगाल मे विजयपुरी एवं पूर्वी बंगाल मे विक्रमपुरी की स्थापना की जो इसकी राजधानिया थी।

कवि श्रीहर्ष ने विजय की प्रशंसा मे विजयप्रशस्ति लिखा।

बल्लालसेन: (1158-1178 AD)

इसने 4 ग्रंथ लिखे जिनमे 'दानसागर' एवं खगोल विज्ञान पर अद्भुत सागर अब भी विद्यमान है।

इसके बाद पुत्र लक्ष्मणसेन (1178-1205) शासक बना। इसने राजधानी गौड़ के पास लक्ष्मणावती की स्थापना की।

लक्ष्मणसेन के दरबार मे कई विद्वान हुए। - 'जयदेव' धोयी गोवर्द्धन

अंत मे सेन राज्य देववंश के आधीन हो गया।

Kd Job Updates

राष्ट्रकूट वंश (संस्थापक : दंतिदुर्ग)
एलोरा के प्रसिद्ध कैलाश मंदिर : कृष्ण I
प्रसिद्ध शासक : गोविन्द : II, ध्रुव, गोविन्द-III
अमोघवर्ष,
अमोघवर्ष ने मान्यखेत नगर की स्थापना की,
यह प्रसिद्ध जैन आचार्य जिनसेन के शिष्य थे।
अरबयात्री सुलेमान ने 851 AD मे अमोघवर्ष
का उल्लेख बलहरा नाम से किया।
कर्क : II अंतिम राष्ट्रकूट शासक था।
कल्याणी के चालुक्य : तैलप II ने
राष्ट्रकूट वंश को समाप्त किया।

(हैहय) त्रिपुरी का कल्चुरी-चेदि वंश :-
चंदेल राज्य चेदि के कल्चुरियों
का राज्य था जिनकी राजधानी
त्रिपुरी थी (जबलपुर : म. प्र.)
प्रथम शासक कोक्कल-I,
युवराज I, शंकरराज, लक्ष्मणराज, को. II
अन्य शासक थे। प्रतापी गांगेयदेव
उसका पुत्र कर्णदेव 1041-1070
सर्वशक्तिशाली कल्चुरी राजा था,
कर्णदेव ने बनारस मे कर्णमेरु
नामक शैव मंदिर बनवाया।
13वीं सदी मे चंदेलो का अधिकार
इनके राज्य पर हुआ।

राजपूत वंश
हर्षवर्धन की मृत्यु से लेकर 12वी सदी तक का इतिहास उत्तरभारत मे राजपूत काल के नाम से जाना जाता है।
-चंदबरदाई की पुस्तक पृथ्वीराज रासो मे राजपूतो की उत्पत्ति अग्निकुंड से बताई गई जिनमे परमार प्रतिहार चौहान सोलंकी शामिल है।

गुर्जर प्रतिहार वंश :- "8वी से 11वी शताब्दी तक"
गुर्जर से शाखा जुड़ी होने के कारण इनको गुर्जर प्रतिहार कहा गया।
इस वंश की स्थापना नागभट्ट-I ने की। (730-756 AD)
नागभट्ट के बाद वत्सराज शासक बना जिसे वास्तविक संस्थापक कहा गया।
वत्सराज के बाद नागभट्ट द्वितीय शासक बना इसने कन्नौज को राजधानी बनाया।
मिहिरभोज I (आदिवाराह) (836-885) सर्वाधिक प्रतापी राजा था।
महेन्द्रपाल-I (885-910) महान विजेता कुशल-प्रशासक था।
महेन्द्रपाल की सभा मे राजशेखर निवास करते थे। वह उनके राजगुरु भी थे।
राजशेखर के प्रमुख ग्रंथ : बालरामायण, काव्यमीमांसा, कर्पूरमंजरी
मुसलमान लेखक अलमसूदी महीपाल के समय मे आया! (915-916)
विजयपाल अंतिम शासक था इसके बाद
गहड़वाल का शासन था।
त्रिपक्षीय संघर्ष 7-8 सदी मे :-
पाल - राष्ट्रकूट - गुर्जरों के बीच

Kd Job Updates

मालवा का परमार वँश (धारा मे विजय स्तंभ की स्थापना : भोज)

10वीं सदी के प्रथम चरण में कृष्णराज एवं उपेन्द्र ने इस वंश की स्थापना की।
धारानामक नगरी परमार वँशीय शासकों की राजधानी थी।
(945-72) हर्ष या सीयक II परमारो का शक्तिशाली सम्राट था।
(972-94) सीयक के बाद मुँज शासक बना जो इतिहास मे वाक्पति मुँज के नाम से प्रसि है
इस वँश के "सिंधुराज" की उपाधि नवसहशांक की थी।
सिंधुराज का पुत्र भोज इस वँश का शक्तिशाली शासक (1010-60) राजधानी धारा एवं कविराज की उपाधि थी।
भोज की रास रचनाएं : व्याकरण, श्रृंगारप्रकाश, कूर्मशतक, भोजचंपू
भोपाल के दक्षिण पूर्व मे 250 वर्गमीटर लंबी झील बनाई।
जो भोजराज के नाम मे प्रसिद्ध है।
13 वी सदी मे तोमरों ने अधिकार किया।

गुजरात के सोलंकी (मूलराज-I) (941-995)
भीमदेव इस वंश का सबसे शक्तिशाली शासक था।
सोमनाथ का मंदिर महमूद गजनवी ने भीम के कार्यकाल मे लूटा
भट्टारिका एवं पत्तनदेव मे मँदिर का निर्माण, सामंत विमल ने दिलवाड़ा मंदिर
जयसिंह सिद्धराज, (1094-1143) प्रतापी, विद्या का सरंक्षक था, हेमचंद्र को संरक्षण दि
आबू पर्वत पर एक मण्डप एवं रुद्रमहाकाल मँदिर का निर्माण कराया।
भीम II के समय 1178 मे मुसलमानो ने आक्रमण किया,
यह गुजरात सोलंकियो का अँतिम शासक था।
इसके बाद उसके मंत्री लवणप्रकाश ने बघेल वँश की स्थापना की।
1240 AD के लगभग उत्तराधिकारियों ने अन्हिलवाड़ पर कब्जा किया, बघेल वँश का अँत 13 वीं सदी मे हुआ।
बाद मे इसे दिल्ली सल्तनत मे मिला लिया गया।

जेजाक मुक्ति के चंदेल (नन्नुक)
यशोवर्मन (925-50) प्रमुख शासक, खजुराहो के चतुर्भुज मंदिर विष्णु की प्रतिमा
धंगदेव (950-1002) इसने चंदेलो को प्रतिहारों से मुक्त किया, विश्वनाथ मंदिर,
जिननाथ, वैद्यनाथ मंदिर का निर्माण, 1002 मे प्रयाग मे जलसमाधि ली।
गंडदेव, विद्याधर पर भी चंदेल शासक थे। परमल अंतिम प्रमुख चंदेल शासक था।
आल्हा, ऊदल इन्ही के सेनानायक थे, तीन प्रधान नगर : कालिंजर महोबा, खजु,
...के ऊंचा कांदरिया महादेव मंदिर, वैष्णव, शैव, जैन धर्म के 30 मंदिर

Kd Job Updates

गहड़वाल वंश !

चंद्रदेव ने स्थापना की (1080-85)
इनकी राजधानी कन्नौज थी, एवं
बनारस को द्वितीय राजधानी बनाया।
मुस्लिम आक्रमण हेतु "तुरुष्कदंड" कर।
इस वंश का प्रमुख शासक गोविन्दचंद्र
(1114-1154) इसका मंत्री लक्ष्मीधर
ने दो ग्रंथ लिखे ! कृत्यकल्पतरु,
कल्पद्रुम
जयचंद्र अंतिम प्रसिद्ध गढ़वाल शासक
था। इसका बंगाल के लक्ष्मण सेन
तथा पृथ्वीराज चौहान के साथ संघर्ष
हुआ।
जयचंद के दरबार मे नैषधचरित
एवं खण्डनखाद्य का लेखक
श्रीहर्ष रहता था।

"चौहान वंश"

चौहान वंश का संस्थापक वासुदेव था।
प्रतिहारो का सामंत था।
अजयपाल ! अजमेर का संस्थापक
पृथ्वीराज-III 1178 मे चौहान वंश का
शासक बना, इसे रायपिथौरा भी कहते
थे। पृथ्वीराज ने चंदेल नरेश परमल को
हराया।
1191 मे तराइन की पहली लड़ाई मे
पृथ्वीराज III ने गौरी को हराया एवं
द्वितीय लड़ाई मे चौहान की हार हुई।
इसके दरबारी चन्दवरदाई ने पृथ्वीराज
रासो की रचना की। जयनाक ने
पृथ्वीराज विजय नाम से संस्कृत काव्य
लिखा, चालुक्य भीम II एवं जयचंद
से संघर्ष हुआ

दिल्ली के तोमर :-

तोमर राजपूतो की एक शाखा थी,
जिसने दिल्ली क्षेत्र में 11वीं सदी मे शासन
किया। तोमर शासक अनंगपाल ने 11वीं
सदी मे दिल्ली की स्थापना की।
इस समय दिल्ली को दिल्लिका कहते थे।

चालुक्य एवं पल्लव

"चालुक्य"
दक्षिण भारत पर शासन करने वाली
तीन शाखाएं होती हैं !
वादामी के पश्चिमी चालुक्य (550-750)
6वी से आठवीं शताब्दी मे दक्षिणी
पथ पर वादामी के चालुक्य का शासन
रहा, उसका स्थान वादामी था।
यह बीजापुर (कर्ना.) मे स्थित है।
चालुक्य कन्नड़ थे, पुलकेशिन I (535-566)
संस्थापक था।
कीर्तिवर्मन को चालुक्य निर्माता
कहा गया।
पुलकेशिन II को पल्लव नरेश
नरसिंहवर्मन ने हराया।
विनयदित्य के समय पट्टदकाल के
विशाल मंदिर बने।
विक्रमादित्य II चालुक्यों का प्रमुख
शासक था इसने पल्लवों की
राजधानी कांची पर हक जमाया।
कीर्तिवर्मन अंतिम शासक था,
इसे राष्ट्रकूट शासक दंतिदुर्ग
एवं कृष्णतृतीय ने 757 मे हरा
दिया।

Kd Job Updates

तैलप: II कल्याणी के चालुक्य (750-1190)
विक्रमादित्य V प्रमुख शासक था (1008-1015)
सोमेश्वर I (1043-1068) अपनी राजधानी मान्यखेत से कल्याणी स्थानांतरित कर दी। सोमेश्वर I ने तुंगभद्रा नदी में डूबकर जान दी।
विक्रमादित्य VI (1076-1126) सबसे महान शासक था।
1076 में इसने नया संवत चलाया "चालुक्य विक्रम संवत" नाम से
इसके दरबार में : विक्रमांकदेवचरित के रचयिता बिल्हण, मिताक्षरा के लेखक विज्ञानेश्वर थे।
विक्रमपुर नामक शहर बसाया, विष्णु मंदिर, विशाल झील
सोमेश्वर III (1126-1138) ने मानसोल्लास नामक ग्रंथ की रचना की।
सोमेश्वर IV (1181-1189) अंतिम शासक था।

वेंगी के चालुक्य (कृष्णा व गोदावरी के मध्य)
विष्णुवर्धन प्रथम शासक, (615-633), वेंगी को राजधानी बनाया।
विजयादित्य (799-847) 108 मंदिरों का निर्माण कराया।
विजयादित्य VII अंतिम शासक था।

"पल्लव"
पल्लवों का मूलस्थान तोण्डमण्डलम एवं राजधानी कांची थी।
सिंहवर्मा प्रथम शासक जिसने तृतीय शताब्दी के अंत में शासन किया। शिवस्कंदवर्मा IV जिसने "धर्ममहाराज" की उपाधि ली महान राजा था।
सिंहविष्णु (576-600) ने अवनिसिंह की उपाधि धारण की।
मामल्लपुरम में वाराहमंदिर का निर्माण कराया, महाकवि भारवि दरबारी थे। सिंहविष्णु का पुत्र महेन्द्रवर्मन I (600-630) शासक बना, उसने मत्तविलास की उपाधि ली। महान निर्माता कवि संगीतज्ञ था।
महेन्द्रवर्मन का पुत्र नरसिंहवर्मन I (630-668) पल्लव का शासक बना इसने चालुक्य नरेश नरसिंहवर्मन को हराया। महाबलीपुरम के रथों का निर्माण नरसिंहवर्मन की महामल्ल की उपाधि थी।
परमेश्वर I (670-700) में मामल्लपुरम में गणेशमंदिर का निर्माण कराया एवं विद्याविनीत की उपाधि धारण की। नरसिंहवर्मन II (700-28) महा शोर मंदिर, कैलाश
नंदीवर्धन मुक्तेश्वर मंदिर वैकुण्ठ का पेरुमल मंदिर अपराजित अंतिम शासक।

Kd Job Updates

शंकराचार्य : इनका जन्म केरल में हुआ, अद्वैतवाद मत के जनक, भक्ति आंदोलन के प्रवर्तक, इनकी 4 पीठ: N: केदारनाथ, S: श्रृंगेरी E: पुरी, W: द्वारिका

चोल साम्राज्य!

-चोलो का साम्राज्य (850-1259) तक दक्षिण भारत मे रहा,
राज (तोडमैंडलम): विजयालय ने स्थापना की (850-871) यह पल्लवों का सामंत था,

राजराज I (985-1014)

लंका नरेश महेन्द्र V को हराकर लंका पर अधिकार किया,
अनुराधापुर के स्थान पर पोल्लनरुव को राजधानी बनाया,
कालिंग व मालदीव भी जीता। राजराजेश्वर का मंदिर बनवाया।
राजेन्द्र प्रथम (1014-1044) एवं कुलोत्तुंग I प्रमुख शासक थे।
राजेन्द्र I ने उत्तर भारत आक्रमण के उपलक्ष्य मे "गंगैकोंड" की उपाधि ली। राजेन्द्र III अंतिम शासक था।

-चोलों की सभ्यता एवं संस्कृति :
-चोल शासकों की मृत्यु के बाद भगवान की तरह पूजा की जाती थी।
केन्द्रीय अधिकारियो की सर्वोच्च श्रेणी! पेरुन्दनम एवं निम्न शिरुदनम कहलाई।
-चोल साम्राज्य 6 प्रांतो मे था।
प्रांत मण्डलम् एवं मण्डल, कोट्टम, या वलनाडु मे बंटे थे, वलनाडु जिलो मे बंटे थे जिनको नाडु कहा गया।
नाडु के अंतर्गत ग्राम संघ थे इनको कुर्रम कहा गया। ग्राम की मुख्य संस्था सभा या उर कहलाई। मंदिरो को दी जाने वाली भूमि देवादान कहलाई। पम्प-पोन्न-रन्न त्रिरत्न थे। कंबन ने तमिल रामायण की रचना की। (कांसे की नटराज मूर्ति चोलो ने बनवाई) सूर्यवर्मन-II कंबोडिया का शासक था इसने अंकोरवाट का मंदिर बनवाया। मंदिर का मुख्य द्वार गोपुरम कहलाया। 8. भारत मे - नागर एवं दक्षिण भारत के मंदिर वेसर शैली एवं द्रविड़ शैली मे है।
- तिरुवल्लुवर कुरल तिरुक्कुरल पोधि सुप्रसिद्ध तमिल लेखक।

कश्मीर एवं सिंध के राजवंश

① कार्कोट: (724-760) ललितादित्य: मार्तंड मंदिर का निर्माण करवाया। जयापीड विनयादित्य: (770-810) विद्वानो का संरक्षक, दामोदर गुप्त क्षीर, उद्भट्ट विद्वान थे।

② उत्पल वंश

9वी सदी मे अवंतिवर्मन ने स्थापना की, रत्नाकर आनंदवर्धन नामक दो प्रसिद्ध कवि थे, गोपाल वर्मन ने माता सुगंधा के संरक्षण मे राज्य किया 939 A D मे इस वंश का अंत हुआ।

③ लोहार वंश:

ब्राह्मणो की सभा ने संग्रामराज को कश्मीर का शासक चुना। इसने लोहार वंश की नींव डाली, भीमगुप्त (950-58) के निधन के बाद रानी दिद्दा ने शासन संभाला। एवं अगले 50 वर्ष तक शासन किया।)
इस वंश की एक अन्य शासिका सूर्यमती के नाम से प्रसिद्ध है।

Kd Job Updates

मुस्लिम आक्रमण

712 मे सिंध के ब्राह्मण मंत्री चच के पुत्र दाहिर को मारकर अरबो ने अधिकार कर लिया यह आक्रमण मो॰ बिन॰ कासिम के नेतृत्व मे हुआ अत॰ इसे भारत पर पहला मुस्लिम आक्रमण कहा गया।

9वी सदी मे सिंध पर शाही वंश ने शासन किया। इस वंश का संस्थापक कल्लर नामक ब्राह्मण मंत्री था। इसी समय सुबुक्तगीन एवं उसके पुत्र महमूद गजनवी ने इस क्षेत्र पर आक्रमण किया, तथा राजपूत शासक जयपाल को पराजित किया। इस पराजय से दुःखी होकर (1001-02) मे जयपाल ने आत्महत्या कर ली। भारत मे सबसे पहले गजनी के शासक कुल से संबंधित सुबुक्तगीन ने 977 मे आक्र किया। वह गजनी के स्वतंत्र तुर्की सरदार अल्पतगीन का दामाद था।

सुबुक्तगीन के पुत्र गजनवी ने 1000 से लेकर 1027 तक कुल 17 आक्रमण किए।

गजनवी ने पहला आक्रमण 1000 मे सीमावर्ती नगरो पर किया।

सोलहवा एवं सर्वाधिक महत्वपूर्ण आक्रमण 1025 मे सोमनाथ मंदिर को लूटकर किया।

सत्रहवा एवं अंतिम आक्रमण 1027 मे पंजाब पर किया।

1030 मे महमूद की मृत्यु हुई।

गजनवी को भारत मे मूर्तिभंजक एवं बुतशिकन कहते हैं।

इसके समय अलबरुनी, फिरदौसी आए थे।

फिरदौसी ने शाहनामा एवं अलबरुनी ने किताबुल हिन्द की रचना की।

मोहम्मद गौरी का आक्रमण

मो॰ गौरी पहला शासक है जिसके सिक्को पर लक्ष्मी देवी की आकृति अंकित थी।

ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती इसी के काल मे आए।

इसको मोहम्मद बिन साम भी कहते हैं।

1191- तराइन-I गौरी की चौहान से हार

1192- तराइन II गौरी की चौहान पर विजय

1194 - चंदावर गौरी की जयचंद पर विजय

Kd Job Updates

गुलाम वंश :-(84) वर्ष :-

कुतुबुद्दीन ऐबक :- दिल्ली का पहला मुसलमान तुर्क शासक ऐबक को माना जाता है। कुतुबुद्दीन तुर्क का निवासी था। 1206 में गौरी की मृत्यु के बाद लाहौर की जनता ने ऐबक को दिल्ली से लाहौर आकर सत्ता संभालने को आमंत्रित किया। ऐबक ने 25 जून 1206 को अपना राज्याभिषेक करवाया। एवं सुल्तान की जगह मलिक एवं सिपहसालार की पदवियों से संतुष्ट रहा।

बंगाल में ऐबक का शासन खिलजी सरदार स्वीकार करने को तैयार न थे।

गौरी के दो अन्य गुलाम गजनी के यल्दौज व उच्छ का नसीरुद्दीन कुबाचा शासन कर रहे थे। ऐबक ने 1197 में अन्हिलवाड़ के शासक भीम-II को पराजित कर गुजरात पर अपना शासन किया। 1202 में कालिंजर के राजा परिमर्दिव को पराजित किया। 1204-5 में ऐबक बंगाल बिहार पर आक्रमण किया।

गुलाम वंश का संस्थापक : ऐबक (1206-10)

लाख बख्श की उपाधि

ख्वाजा कुतुबउद्दीन बख्तियार काकी की स्मृति में कुतुबमीनार का निर्माण कराया।

1210 में चौगान खेलते हुए घोड़े से गिरकर मौत।

आरामशाह (1211) माह 8 महीने शासक रहा।

शमसुद्दीन इल्तुतमिश (1211-36)

ऐबक की मृत्यु के पश्चात दिल्ली की बागडोर उसके गुलाम एवं दामाद इल्तुतमिश के हाथ में आई। इसे सुल्तान की पदवी बगदाद के खलीफा से मिली।

1211-20 में इल्तुतमिश ने कुबाचा, यल्दौज एवं बंगाल के अलीमर्दान समेत राजपूतों की शक्तियों को कुचला।

1220-28 में चंगेज खान के आक्रमण से सुरक्षित राज्य किया।

इल्तुतमिश ने तुर्कान-ए-चहलगन नाम से अपने वफादार सरदारों का संगठन बनाया। इक्ता प्रणाली का आरंभ कराया। चांदी का टंका व तांबे का जीतल चलाया। कुतुबमीनार का निर्माण पूर्ण करवाया। राजधानी दिल्ली को बनाया।

इल्तुतमिश के बाद दरबारियों ने 1236 में रुक्नुद्दीन को शासक बनाया लेकिन कुछ ही महीनों में उसका वध कर दिया।

रुक्नुद्दीन के बाद उसकी बहन रजिया ने शासन संभाला, वह इल्तुतमिश की पुत्री थी। रजिया एकमात्र दिल्ली की महिला सुल्तान थी। रजिया के पतन का मुख्य कारण अमीरों एवं मलिकों की महत्वकांक्षा थी।

'कला' व 'कुमा' की प्रथा की : पर्दा के विरुद्ध

रजिया के बाद बहरामशाह (1240-42) सुल्तान बना। इसके समय तुर्क अमीरों को "नायाब-ए-मुमलिकात" नियुक्त करने का अधिकार था, पहली नियुक्ति एतगीन की थी। जिसे 1242 में सैनिकों द्वारा मार दिया गया।

Kd Job Updates

ममूदशाह (1242-46) लेकिन उसके समय शक्तियां बलबन के हाथ मे थी।
जून 1246 मे ममूद को सिंहासन से हटाया गया एवं
कारागार मे उसकी मौत हुई।

नसीरुद्दीन महमूद (1246-66) : वास्तविक शक्ति बलबन

सुल्तान महमूद :- यह एक धार्मिक सुल्तान था, इसकी पत्नि स्वयं खाना बनाती थी। 1265 मे मृत्यु हुई।

(लौह-रक्त नीति) गयासुद्दीन बलबन (1266-87)

यह इल्तुतमिश के 40 गुलामों मे एक था, लेकिन अपने कौशल के दम पर इसने एक नवीन राजवंश 'बलबनी' की नींव डाली।
'सिजदा' एवं 'पैबोस' चलवाया।

बलबन के 6 माह बाद कैखुसरव शासक बना। फिर क्यूमर्स सुल्तान बना।

संस्थापक : जलालुद्दीन — खिलजी वंश (1290-1320)

13 जून 1290 को कैकुबाद के किले में (किलोखरी) जलालुद्दीन का अभिषेक हुआ।
उसने जलालुद्दीन फिरोज की उपाधि ली।

जलालुद्दीन के समय उसके भतीजे तथा माणिकपुर के सरदार अलाउद्दीन ने 1296 मे द. भारत के देवगिरी पर आक्रमण किया। यहां का राजा रामचंद्रदेव था। द. भारत पर यह पहला मुस्लिम आक्रमण था।

20 जुलाई 1296 को नदी किनारे ही अलाउद्दीन ने जलालुद्दीन का वध करवाया

(गुर्शास्प अली) अलाउद्दीन खिलजी (1296-1316) (सिकंदर II)

इसने धर्म पर राज्य नियंत्रण रखा ऐसा करने वाला यह पहला शासक था।

अलाउद्दीन समस्त हिंदु अधिकारियो से उनके हक छीन लिए।
लगान : $\frac{1}{2}$, बिस्वा इकाई, दीवान ए मुस्तखराज की स्थापना।

शहाना ए मंडी, के कार्यालय मे सभी व्यापारियों को पंजीकरण करवाना पड़ता है
इनकी देखभाल 'दीवान ए रियासत, शहाना मंडी तथा न्याय के लिए सराय अदल नाम के अधिकारियों की नियुक्ति की गई,
इसके अलावा बरीद ए मंडी तथा मुनहियान आदि अधिकारी नियुक्त किए गए।
स्थाई सेना को नकद वेतन देने वाला पहला शासक।
घोड़ो को दागना, सैना का हुलिया रखना।

सबसे बड़ा अधिकारी खान, अलाउद्दीन की दक्षिण विजय का श्रेय 'मालिक काफूर' को था, वह हिजड़ा था, जो अपनी योग्यता के बल पर 'नाइब' पद पर पहुंचा।

Kd Job Updates

उसके समय द. भारत मे ४ शक्तिशाली राज्य थे;
① होयसल : वीरबल्लाल III - द्वारसमुद्र
② काकतीय : प्रताप रुद्रदेव III : वारंगल
③ पांड्य : वीरपांड्य : मदुरै
④ यादव : रामचंद्रदेव : देवगिरी

तेलांगाना आक्रमण के समय शासक प्रताप रुद्रदेव ने मालिक काफूर को कोहिनूर भेंट किया। अला. ने मंगोलो को विफल किया।

5 जनवरी 1316 को बीमारी से मृत्यु होने के बा मालिक काफूर ने शासन संभाला।

अलाउद्दीन खिल. द. भारत पर विजय पाने वाला प्रथम सुल्तान था

अलाउद्दीन के दरबार मे खुसरो, हसन देहलवी जैसे विद्वान थे।

हजार खंभा महल, सीरी का किला, तालाब का निर्माण

कुतुबुद्दीन मुबारक खिलजी (1316-20)
पहले मुबारक खिलजी उदार शासक था,
मुबारक ने स्वयं को खलीफा घो. किया,
15 अप्रैल 1320 को खुसरव ने मुबारक का कत्ल करवाया।

उसके बाद खुसरवशाह (अप्रैल 1320) नया सुल्तान बना, यह हिन्दू से परिवर्तित मुसलमान हुआ था। उसे गुजराती हिन्दू सैनिको का समर्थन था।

गाजी मालिक तुगलक: दीपालपुर के सूबेदार था। उसने इन्द्रप्रस्थ के निकट खुसरव को पराजित किया। एवं वध करवा दिया। एवं नए राजवंश 'तुगलक' की स्थापना की।

तुगलक वंश (1320-1414)

तुगलक वंश की नींव गयासुद्दीन तुग. ने डाली। इसका पिता मालिक तुगलक एक तुर्की गुलाम था। माता एक जाट थी। (1320-25)

उसने लगान निर्धारण के लिए "नस्क" एवं "बटाई" प्रथा ही रखी। उसने पुलो का निर्माण कराया, डाक व्यवस्था भी शुरू करवाई। 'दाग' हुलिय का कठोरता से पालन करवाया।

जूनां खां मो० बिन तुगलक (1325-51)
'इसामी, बरनी, इब्नबतूता' इतिहासकार
इसने अपने सिक्को पर :
"अल सुल्तान जिली अल्लाह" लिखवाया
'यह योग्यता के अनुसार पद देता था न कि धर्म के अनुसार'
मकान 'चारागाह' कर भी वसूल किया'
प्रमुख 5 कार्य :-
राजधानी परिवर्तन : दिल्ली से देवागिरी
सांकेतिक मुद्रा, खुरासान विजय योजना
कृषि का नया विभाग "दीवान ए कोही"
'दोआब' मे कर वृद्धि'

Kd Job Updates

दिल्ली सल्तनत मे सबसे बड़ा राज्य M.B.T. का ही था। 1341 मे तैमूर ने एक राजदूत भेजा जबकि 1342 मे इब्नबतूता को MBT ने चीन भेजा
इसके समय कई स्वतंत्र राज्य बने जैसे:- 1336 मे हरिहर बुक्का ने विजयनगर
1347 मे बहमनशाह ने बहमनी। जैन विद्वान "जिनप्रभु सूरी को सम्मानित किया"
स्वर्गा दुआरी का निर्माण कराया। सर्वाधिक भाषाओं की जान·
नवामा' (राजपूत राजा रणमल) फिरोज तुगलक (1351-88):-
① हिन्दू ब्राम्हणों से भी जजिया कर वसूला।
② भारत मे जजिया कर लगाने वाला प्रथम सुल्तान।
③ 100 सराय, 100 अस्पताल 40 मस्जि· 30 विद्यालय, 20 महल
5 मकबरे, 100 सार्वजनिक स्नानागार, 10 स्तंभ, 150 पुल अनेक बाग बनवाए।
1200 फलों के बाग लगवाए।
150 कुए, 5 बड़ी नहर 50 बांध 30 झीलों का निर्माण।
300 नए नगर बसाए जिनमे प्रमुख :
फिरोजशाह
जौनपुर
हिसार
फिरोजाबाद
'दीवान ए खैरात': असहाय मुस्लिम अनाथ एवं विधवाओ हेतु
सैनिक सेवा को वंशानुगत किया। इस्लाम कानून की प्रधानता दी।
खुद को 'खलीफा' 'नाइब' पुकारा 'सिक्को मे 'खलीफा' लिखवाया'
'फुतुहात-ए-फिरोजशाही' लिखी।
दासो के लिए 'दीवान-ए-बंदगान'।
अद्धा एवं बिख नामक दो सिक्के।
गयासुद्दीन तुगलक II (1388-89) एवं हुमायु कुछ समय शासक रहे।
नसीरुद्दीन महमूद शाह: (1394-1412)
तुगलक वंश का अंतिम शासक था।
इसके समय जौनपुर स्वतंत्र राज्य की स्थापना हुई।
1398 मे तैमूर लंग का आक्रमण।
·1412 मे नसीरुद्दीन की मृत्यु के साथ तुगलक वंश का अंत हुआ।

Kd Job Updates

खिज्र खां ने स्थापना की (1414-21) 'रैयत ए आला' की उपाधि ली।
20 मई 1421 मे मृत्यु के बाद मुबारक शाह

सैयद वंश (1414-1451) शासक बना।

(1421-34) मुबारक शाह सैयदों मे सर्वाधिक योग्य शासक था, उसने (खलीफ) का स्वामित्व नही स्वीकारा।
यमुना तट पर "मुबारकाबाद" बसाया।
तात्कालीन विद्वान 'याह्या सरहिंदी' को संरक्षण दिया।
उसने 'तारीख-ए-मुबारकशाही' लिखा।
मुबारक की मृत्यु के पश्चात उसके भाई का पुत्र 'मुहम्मद बिन फरीद खां' मुहम्मद शाह के नाम से गद्दी पर बैठा।
मुहम्मद शाह (1434-45) की मृत्यु के बाद अलाउद्दीन आलमशाह अंतिम शासक बना।

संस्थापक: बहलोल [1451-89] लोदी वंश (1451-1526)
बहलोल ने जौनपुर को दिल्ली मे मिलाया। बहलोली सिक्के चलाए
सिकंदर लोदी (1489-1517) का नाम 'निजाम खां' था।
भूमि मापन हेतु 30 इंच का 'गज ए सिकंदरी' चलाया।
मुहर्रम पर ताजिया निकालना बंद कराया एवं मजारों पर महिलाओं का जाना बंद कराया।
1504 मे आगरा बसाया।
गुलरुखी नाम से गजल व कविताएं लिखता था।
गान विद्या का एक प्रसिद्ध ग्रंथ लज्जत ए सिकंदरशाही था
इब्राहिम लोदी (1517-26) न सिर्फ लोदी वंश बल्कि संपूर्ण दिल्ली सल्तनत का अंतिम सुल्तान था।
12 अप्रैल 1526 को पानीपत I लड़ाई मे,
जहीरुद्दीन बाबर ने इब्राहिम लोदी को हराया एवं मार डाला। एवं मुगल वंश की नींव डाली।

Kd Job Updates